2018 जनमत

प्रतिदिन अखबार
www.pratidinakhabar.com
अमरावती, मंगलवार, 20 नवंबर 2018

राहुल का कर्ज माफी का दांव

भाजपा के लिए चिंता का सबब

- ग्राऊंड रिपोर्ट : खाली पड़ी हैं मंडियां, किसान नहीं बेच रहे धान की फसल
- किसानों को कांग्रेस सरकार का इंतजार, ताकि माफ हो कर्ज, 10 दिन बाद बेचेंगे फसल

पाटन, 19 नवम्बर, एजेंसी- भाजपा भले ही राहुल गांधी के दावों को गंभीरता से न ले, लेकिन छत्तीसगढ़ में कर्ज माफी के राहुल गांधी के दांव को किसान गंभीरता से ले रहे हैं और इसका असर यहां मंडियों में धान की खरीद पर साफ नजर आ रहा है. हालत यह है कि धान की खरीद शुरू हुए एक पखवाड़ा हो चुका है, लेकिन मंडियां खाली पड़ी हैं और इक्का-दुक्का किसान ही धान की फसल बेचने के लिए पहुंच रहे हैं. इसकी वजह कांग्रेस और राहुल गांधी का कर्ज माफी का दांव माना जा रहा है. किसानों को लग रहा है कि अगर कांग्रेस की सरकार बनती है और दस दिनों में उनका कर्ज माफ हो जाता है, तो धान की फसल बेचने के लिए कुछ दिन क्यों न इंतजार कर लिया जाए.

नई सरकार का इंतजार

जब हम पाटन की जामगांव मंडी में पहुंचे, तो वहां किसान कम थे. वहां बैठे जिला ग्रामीण बैंक और सेवा समिति के कर्मचारियों से मुलाकात

विशुद्ध राजनीति छत्तीसगढ़

हुई. वह बोले, 1 नवंबर से धान की खरीद तो शुरू हुई, लेकिन अब तक बेदह कम खरीद हुई. वजह पूछने पर उन्होंने बताया कि कांग्रेस कर्ज माफी का वादा कर रही है, इसलिए किसानों को लगता है कि कुछ दिन देख लिया जाए. अगर कर्ज माफ होना ही है, तो फिर पहले कर्ज चुकाने की क्या जरूरत है. अगर अभी फसल बेच दी, तो साथ ही बैंक कर्ज की रकम वसूल लेगा. ऐसे में कर्ज माफ हुआ, तो उसका फायदा उन्हें मिलेगा ही नहीं क्योंकि उनका कर्ज तो पहले ही चुकता हो चुका होगा.

मंडियां पड़ी हैं सूनी

इस मंडी में 1019 किसानों का रजिस्ट्रेशन है, लेकिन अब तक 100 ने भी फसल नहीं बेची, जबकि 15 दिन हो चुके हैं. यही स्थिति दुर्ग, सरगुजा जैसे इलाकों समेत राज्य की मंडियों में भी देखने को मिल रही है और यही भाजपा के लिए भी चिंता का सबब बन रही है. पाटन के ही दिधारा गांव के लोकनाथ वर्मा ने कहा, 'हां मैं भी अभी फसल नहीं बेच रहा. कुछ दिन रुक जाऊं, तो क्या फर्क पड़ता है.' तो क्या किसानों का वोट इस बार कांग्रेस को जा रहा है? इस पर वर्मा बोले, कह नहीं सकते.

31 अक्टूबर तक कर्जदार किसानों को होगा फायदा!

दुर्ग ग्रामीण सीट से चुनाव लड़ रहे कांग्रेस सांसद ताम्रध्वज साहू ने कहा कि दो दिन पहले किसानों के धान न बेचने की बात हमारे सामने आई थी. राहुल गांधी के साथ जब यहां नेताओं की बैठक हुई, तो यह मुद्दा उठा था. हम लोग सोच रहे हैं कि यह घोषणा कर दें कि जिन किसानों पर 31 अक्टूबर तक कर्ज था, उन्हें कर्ज माफी का फायदा मिलेगा, ताकि उनकी उलझन दूर हो सके और वह अपनी फसल तो बेच सकें.

तेलंगाना विधानसभा चुनाव 2018

मतदान से पहले टीआरएस अध्यक्ष के. चंद्रशेखर राव ने किया यज्ञ

रायपुर, एजेंसी,19 नवम्बर- तेलंगाना विधानसभा चुनाव 2018 से पहले तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) के अध्यक्ष और कार्यवाहक मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने रविवार को सिद्दिपेट जिले में स्थित अपने फार्महाउस में एक यज्ञ किया.

एक आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार, राव ने इरावल्ली में अपने फार्महाउस में राजा श्यामला यज्ञ, चंडी यज्ञ और अन्य धार्मिक संस्कार किए. इसमें उनकी पत्नी और परिवार के अन्य सदस्यों ने भी हिस्सा लिया.

मैदान के महारथी

क्या परिवर्तन यात्रा से पास पलट पाएंगे ज्योतिरादित्य

युवा नेता ज्योतिरादित्य मध्य प्रदेश में कांग्रेस की ओर से मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार हैं. ग्वालियर राजघराने से ताल्लुक रखने वाले सिंधिया ने युवराज की छवि को परे रखते हुए मध्य प्रदेश में परिवर्तन यात्रा के जरिये करीब एक लाख किलोमीटर का दौरा कर जमकर पसीना बहाया है और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के खिलाफ माहौल बनाने के साथ पार्टी कार्यकर्ताओं में जोश भरा है. चुनावी सर्वेक्षण बता रहे हैं कि कांग्रेस राज्य में 15 साल से काबिज भाजपा को टक्कर दे रही है और पासा पलटने की भी स्थिति में है.

राजनीतिक विरासत को बखूबी संभाला

47 वर्षीय ज्योतिरादित्य सिंधिया मध्य प्रदेश की गुना संसदीय सीट से लोकसभा सांसद हैं. कांग्रेस के युवा नेताओं में शुमार ज्योतिरादित्य सियासी माहौल में पले-बढ़े हैं. पिता स्वर्गीय माधव राव सिंधिया कांग्रेस के बड़े नेता रहे हैं. परिवार की राजनीतिक विरासत को उन्होंने बखूबी संभाला है. साल 2002 में गुना से सिंधिया भारी अंतर से जीतकर पहली बार संसद पहुंचे थे और जब 2014 में कांग्रेस को सिर्फ 44 सीटें मिलीं, तब भी वह लगातार चौथी बार सांसद चुने गए. हालांकि उन्होंने कभी विधानसभा चुनाव नहीं लड़ा है.

पहली बार 2008 में मंत्री बने

ज्योतिरादित्य छह अप्रैल 2008 को पहली बार मनमोहन सरकार में सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री बने. यूपीए-2 में जब मनमोहन सिंह दूसरी बार प्रधानमंत्री बने तो सिंधिया को ऊर्जा मंत्रालय में राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) का दर्जा मिला.

ताकत

- **बेबाकी से रखते हैं बात :** उनके भाषणों में सौम्यता और आक्रामकता का अनोखा मिश्रण है. रैलियों और अन्य सार्वजनिक मंचों पर वह बेबाकी से अपनी बात रखते हैं. यह वजह है उन्हें सुनने को भीड़ उमड़ती है. संसद में भी जब उन्हें मौका मिला है, तो तथ्यों के साथ सरकार को घेरन में उन्होंने कभी नरमी नहीं बरती

कमजोरी

- **प्रदेश की राजनीति में सक्रियता कम रही:** ज्योतिरादित्य इस चुनाव के पहले राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में ज्यादा सक्रिय रहे हैं. सिंधिया ने भले ही राजा होने की छवि को झुठलाया हो, पर चुनाव में भाजपा शिवराज को किसान का बेटा बताने के साथ राजपरिवार से जुड़े सिंधिया के बीच तुलना करना नहीं भूलती.

क्रिकेट संघ के भी अध्यक्ष

ज्योतिरादित्य को गाड़ियों, गोल्फ और घुड़सवारी का शौक है. स्कूली शिक्षा के दौरान उन्होंने निशानेबाजी में भी हाथ आजमाया. क्रिकेट उनका पसंदीदा खेल है, वह मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष हैं.

चुनाव चिह्न के चक्रव्यूह में फंसा जोगी का राजनीतिक वजूद

बिलासपुर, 19 नवंबर, एजेंसी- आप इसे पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी के प्रति जनता का प्रेम कह लें या उनके डर का प्रभाव, पूरे मरवाही विधानसभा क्षेत्र में घूम लीजिए उनके खिलाफ खुलकर बोलने वाले नहीं मिलेंगे. ऐसा नहीं है कि मरवाही में विकास की गंगा बह रही है.

इस आदिवासी बहुल विधानसभा क्षेत्र में तमाम तरह की समस्याएं हैं. सड़कें खराब हैं. स्कूलों में शिक्षकों की कमी है. डॉक्टरों एवं आधारभूत संरचना के अभाव में अस्पताल रेफर सेंटर बन गए हैं. कृषि को छोड़ रोजगार के कोई व्यवस्थित साधन नहीं है. सिंचाई की समुचित व्यवस्था न होने के कारण कृषि भी प्रकृति पर निर्भर है.

बावजूद जोगी परिवार का मरवाही विधानसभा क्षेत्र पर 18 वर्षों से कब्जा है. जोगी एक बार फिर मरवाही के अखाड़े में अपना भाग्य आजमाने उतरे हैं लेकिन अपने ही बनाए चक्रव्यूह में फंस गए हैं. वे चक्रव्यूह भेद पाते हैं या नहीं यह तो 11 दिसंबर को मतगणना के दौरान ही पता चलेगा.

बिलासपुर-पेंड्रा-मनेंद्रगढ़ मुख्य मार्ग पर कारीआम से छत्तीसगढ़-मध्य प्रदेश की सीमा भेड़वा नाला तक सड़क के दोनों किनारे स्थित दुकान-मकान गुलाबी झंडे से पटे पड़े हैं. यह गुलाबी झंडा अजीत जोगी द्वारा बनाई गई पार्टी जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ का है. बैनर और झंडों के जोर को देखकर कहा जा सकता है कि यहां भाजपा और कांग्रेस पर जोगी भारी हैं. लेकिन, हकीकत में ऐसा है नहीं.

भाजपा की प्रत्याशी अर्चना पोर्ते और कांग्रेस प्रत्याशी गुलाब सिंह राज को कम आंकना खतरे से खाली नहीं है. इसलिए कि कांग्रेस छोड़ खुद की पार्टी जकांछ बनाकर चुनावी मैदान में हल जोतता हुआ किसान चुनाव चिन्ह गांव-देहात के मतदाताओं तक पहुंचाना जोगी के सामने सबसे बड़ी चुनौती है. 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ राज्य सृजन के बाद राज्य के पहले मुख्यमंत्री बने जोगी कांग्रेस से मरवाही विधानसभा उप चुनाव-2001 जीतकर छत्तीसगढ़ विधानसभा में पहुंचे. उन्होंने मरवाही से कांग्रेस के टिकट पर 2003 और 2008 में विधानसभा चुनाव जीता. 2013 में जोगी ने चुनाव नहीं लड़ा. उन्होंने कांग्रेस के टिकट पर अपने बेटे अमित जोगी को मरवाही के मैदान में उतारा. अमित ने कब्जा बरकरार रखा.

सीधे कहें तो मरवाही के मतदाताओं और कांग्रेस के बीच मोहब्बत रही है. यह मोहब्बत ही अजीत जोगी के लिए चक्रव्यूह बन गया है. 1972 में मरवाही विधानसभा के अस्तित्व में आने के बाद से 2013 तक हुए 11 विधानसभा चुनाव में अपवाद स्वरूप सिर्फ दो बार 1990 और 1998 में भाजपा की जीत हुई है. इस क्षेत्र के सुदूर आदिवासी अंचल के मतदाता जोगी के साथ-साथ कांग्रेस के चुनाव चिन्ह हाथ को जानते और पहचानते हैं. इनके बीच जोगी अगर अपना चुनाव चिन्ह पहुंचा सके तो ठीक नहीं तो मरवाही में इनकी राजनीति की कहानी खत्म हो सकती है.

पतगंवा में सड़क के किनारे अपने घर के सामने बैठे बुजुर्ग पूरण दास कहते हैं- जोगी जब मुख्यमंत्री रहिस तो ठीक काम करे रहिस तउन से ऊजीतत रहिस. ऐही कारण से ओखर लड़का का भी जीता दिहिन. लेकिन, इस बार देखे क पड़ही. मरवाही में बकरी एवं गाय को चराने वाले हर तरफ दिख जाते हैं. उन्हें झुंड में अपनी बकरियों और गायों की संख्या दूर से ही गिन लेने की महारत हासिल है लेकिन अबकी किसकी जीत होगी, के सवाल पर चुप्पी साध लेते हैं. कोटा के जंगल में बकरी चरा रहे गोपाल सिंह एवं उनके साथी बाल सिंह ने बहुत जोर देने पर कहा कि अबकी मुकाबला कमल और पंजा छाप के बीच लगता है.

जयपुर : कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री तथा प्रत्याशी अशोक गहलोत अपना नामांकन दाखिल करते हुए.

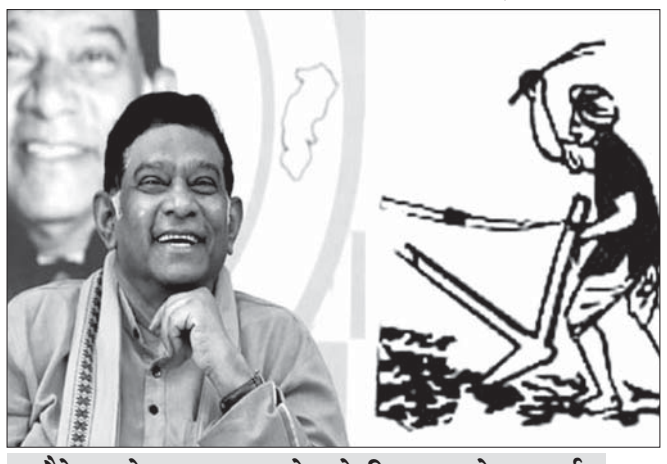

गौरेला के वार रूम से जोगी लड़ रहे लड़ाई

अजीत जोगी खुद मारवाही से चुनाव लड़ने के साथ-साथ अपनी पत्नी रेणु जोगी को बगल की सीट कोटा से लड़ा रहे हैं. जबकि पुत्रवधू ऋचा जोगी को अकलतरा से बसपा के टिकट पर चुनाव लड़ा रहे हैं. इसके साथ ही उनके कंधे जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ के प्रत्याशियों को चुनाव लड़ाने की भी जिम्मेवारी है. उन्होंने मरवाही विधानसभा क्षेत्र के गौरेला को वाररूम बना रखा है. जोगी दिन के 11-12 बजे तक गौरेला में रहते हैं. फिर हेलिकॉप्टर से राज्य के दूसरे क्षेत्रों में प्रचार के लिए उड़ जाते हैं और शाम को चार-पांच बजे वापस गौरेला में लैंड करते हैं.

भाजपा की रणनीति, कांग्रेस की गलतियों पर रहेगी हमलावर

कांग्रेस की 'लूज डिलीवरी' पर बल्लेबाजी कर रही भाजपा

भोपाल, 19 नवंबर,एजेंसी- जैसे-जैसे विधानसभा चुनाव का प्रचार जोर पकड़ रहा है, भाजपा और कांग्रेस के बीच सियासी चौके-छक्के की संख्या भी बढ़ती जा रही है. वचन पत्र में कर्मचारियों के संघ की शाखा में जाने पर बैन लगाने की बात हो या फिर महिलाओं को टिकट देने संबंधी कमलनाथ का बयान, पिछले एक हफ्ते में कांग्रेस ने ऐसी कई 'लूज डिलीवरी' दी है, जिस पर भाजपा ने आगे बढ़कर सियासत के चौके-छक्के जड़े हैं. सूत्रों के मुताबिक भाजपा की चुनावी रणनीति भी यही है कि जैसे ही कांग्रेस की गेंद पर थोड़ा सा भी रुम (शॉर्ट खेलने लायक जगह) मिले, उस पर चूकना नहीं है और जितने हो सके सियासी रन बटोरने हैं.

एक हफ्ते में हुए तीन-चार किस्से इसके उदाहरण भी हैं. वहीं कांग्रेस के 'गुस्सा आता हैं' चुनावी अभियान पर भी भजपा पलटवार कर रही है. कांग्रेस द्वारा दिए गए मौके को मुख्यमंत्री रोज हो रही आठ से दस चुनावी सभाओं में जमकर भुनाते हैं, वहीं भाजपा की सोशल मीडिया व अन्य टीम भी इस पर काम करती हैं.

कांग्रेस की गेंद, जिन पर भाजपा ने रन बटोरे

- वचन पत्र में सरकारी कर्मचारियों के शाखा में हिस्सा लेने पर प्रतिबंध लगाने का प्रावधान भाजपा ने इसे अपने हिसाब से ट्विस्ट किया और संघ पर प्रतिबंध लगाने से जोड़कर राजनीति की, कांग्रेस को सफाई देनी पड़ी.
- कमलनाथ ने महिलाओं को उम्मीदवार बनाने के सवाल पर कहा कि हमने सजावट के लिए महिलाओं को प्रत्याशी नहीं बनाया. भाजपा ने कांग्रेस को महिला विरोधी करार दिया.
- कमलनाथ का मुस्लिम नेताओं के साथ बैठक का एक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें वे संघ से बाद में निपट लेने की बात कर रहे है. भाजपा ने इस बात को हिंदू विरोधी बताकर खूब सियासत की.

माफ करो महाराज पर कांग्रेस का पलटवार

भाजपा के चुनावी नारों पर कांग्रेस भी पलटवार कर रही है। भाजपा नेताओं की बयानबाजी पर सियासत का मौका तो कांग्रेस को अभी तक नहीं मिला, लेकिन 'माफ करो महाराज, हमारा नेता शिवराज' जैसे भाजपा के चुनावी नारों को काउंटर करने के लिए कांग्रेस ने भी अपनी चुनावी रणनीति तैयार की है। कांग्रेस ने 'माफ करो शिवराज' नारे के साथ एक और वीडियो शृंखला तैयार की है।

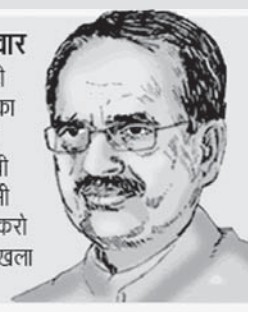

मचाया हल्ला : भाजपा ने कांग्रेस को विवादित बयानबाजी के जरिए सियासत चमकाने का मौका बहुत ज्यादा तो नहीं दिया, लेकिन नेशनल हेराल्ड केस में संबित पात्रा की प्रेस कांफ्रेंस को लेकर कांग्रेस ने जरुर खूब हल्ला मचाया. चुनाव आयोग ने भी संबित पात्रा के खिलाफ एफआईआर करवा दी.

भाजपा के पास उपलब्धि के नाम कुछ नहीं

कांग्रेस के प्रवक्ता पंकज चतुर्वेदी ने कहा कि भाजपा के पास उपलब्धि के नाम पर कुछ नहीं है. कांग्रेस नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया और दिग्विजय सिंह ने मुख्यमंत्री को खुले मंच पर चर्चा की चुनौती दी, लेकिन मुख्यमंत्री और भाजपा नेता चर्चा से भागकर गैरजरुरी मुद्दों पर चिल्ला रहे हैं. कोई भी व्यक्ति तभी चिल्लाता है, जब उसके पास तथ्य न हो. भाजपा द्वारा जनता से सुझाव मांगना यह बताता है कि उसने 15 साल सरकार में कुछ नहीं किया.

चर्चित सीटों में शुमार एक और विधानसभा क्षेत्र

टोंक से सचिन की चुनावी टक्कर पर टिकी निगाहें

आस-पास की सीटों पर कांग्रेस के पक्ष में माहौल बनाना हो सकता है एक कारण

जयपुर, 19 नवम्बर, एजेंसी- झालरापाटन और सरदारपुरा विधानसभा सीटें बीते डेढ़ दशक से प्रदेश की सबसे चर्चित सीटों में शुमार रही हैं. झालरापाटन से भाजपा की दिग्गज नेता वसुंधरा राजे चुनाव लड़ती हैं तो सरदारपुरा पर कांग्रेस के कद्दावर नेता अशोक गहलोत ताल ठोकते हैं. ये दोनों सीटें हॉट सीटों में शामिल हैं. सरदारपुरा सीट से गहलोत पांचवीं बार तो झालरापाटन से वसुंधरा राजे चौथी बार चुनावी दंगल में उतर रहे हैं.

इस बार कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष पायलट टोंक से चुनाव लड़ने जा रहे हैं. सचिन के चुनाव लड़ने की अटकलों के बीच राजनीतिक हलकों में अनेक सीटों के कयास लगाए जा रहे थे. समझा जा रहा था कि सचिन दौसा अथवा अजमेर संसदीय क्षेत्र के तहत आने वाली किसी विधानसभा सीट से चुनावी समर में उतर सकते हैं. लेकिन जब कांग्रेस के टिकटों की घोषणा हुई तो उनका नाम टोंक सीट से सामने आया. विश्लेषकों को भी आश्चर्य हुआ कि आखिर सचिन टोंक सीट से क्यों उतरे?

सचिन के टोंक से चुनावी समर में उतरने के पीछे राजनीतिक इलकों में एक बड़ा सवाल तैर रहा है. आखिर सचिन ने टोंक सीट को सुरक्षित क्यों समझी. जाहिर-सी बात है कि हर बड़ा नेता (जिसे अपनी सीट चुनने का अधिकार हो) अपने लिए सुरक्षित सीट ही चुनना चाहता है. तो सचिन को टोंक सीट जीतने लायक क्यों लगी? खासकर तब, जब पिछले चुनाव में कांग्रेस को यहां से 30 हजार मतों से हार का सामना करना पड़ा था. पहला कारण ये हो सकता है कि सचिन दौसा-अजमेर संसदीय क्षेत्र की किसी सीट से चुनाव न लड़कर ये साबित करना चाहते हैं कि वे राजस्थान के किसी भी कोने से चुनाव लड़ भी सकते हैं और जीत भी सकते हैं. बड़े नेता की पहचान के राजनीतिक मायने ये भी हैं कि वह अपने विरोधियों को राजनीतिक भाषा में संदेश देने का साहस रखता हो. इस लिहाज से टोंक की सीट का चयन सचिन की दूरगामी रणनीति का हिस्सा हो सकती है. भाजपा ने इस सीट से वर्तमान विधायक अजीत मेहता पर एक बार फिर विश्वास जताया. टोंक से सचिन के चुनाव लड़ने का एक कारण आस-पास की सीटों पर कांग्रेस के पक्ष में माहौल बनाना भी हो सकता है. टोंक की पांच और अजमेर जिले की सात तथा कोटा संभाग की 17 यानी कुल 29 सीटों में से कांग्रेस के खाते में पिछले चुनाव में महज एक सीट आई थी. सचिन के यहां से चुनाव लड़ने के पीछे कारण कुछ भी रहा हो, पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कांग्रेस ने इस सीट पर प्रदेशाध्यक्ष को लड़ाकर बड़ा राजनीतिक संदेश देने की कोशिश की है. टोंक सीट पर अल्पसंख्यक मतदाताओं की बहुलता है. गुर्जर और अनुसूचित जाति के मतदाताओं की बड़ी संख्या भी कांग्रेस की मददगार हो सकती है. फिर सचिन कांग्रेस का बड़ा चेहरा भी हैं. टोंक विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं की राय तो 11 दिसंबर को ही सामने आएगी, पर राजनीतिक हालात की पृष्ठभूमि में कहा जा सकता है कि ये सीटें प्रदेश की सर्वाधिक चर्चित सीटों में शुमार हो गई है.

चयन का राजनीतिक विश्लेषण

कांग्रेस : टोंक की पांच, अजमेर की सात व कोटा संभाग की 17 सीटों पर साधा निशाना, पिछले चुनाव में जीती थी महज एक सीट

* पिछले छह चुनाव में चार बार भाजपा जीती है.
* पिछले छह चुनाव में कांग्रेस अल्पसंख्यक उम्मीदवार पर भी दांव खेलती आ रही है.
* 1990 से 2008 तक पांच विस चुनाव में भाजपा की तरफ से महावीर प्रसाद जैन उतरे और तीन बार जीत हासिल की. पांच बार में से चार बार उनका मुकाबला कांग्रेस की जकिया इनाम से हआ. जकिया भी कांग्रेस टिकट पर चार बार चुनाव लड़ीं और दो बार विधायक बनीं.

आज का इतिहास 20 नवंबर

1751 - टीपू सुल्तान का जन्म.
1780 - ब्रिटेन ने हॉलैंड के खिलाफ जंग का ऐलान किया.
1818 - साइमन बोलीवार ने वेनेजुएला की स्वतंत्रता की घोषणा की.
1873 - बुडा-पेस्ट शहरों को मिलाकर हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट बनी.
1901 - अमेरिका द्वारा पनामा नहर के निर्माण के बारे में दूसरी संधि हुई.
1917 - बोस अनुसंधान की स्थापना कलकत्ता में हुई.
1924 - तुर्की में कुर्द विद्रोह दबाया गया.
1945 - द्वितीय विश्वयुद्ध के नाजी युद्ध अपराधियों के खिलाफ यूरेम वर्ग में मुकदमा शुरु हुआ.
1745 - इंग्लैंड की राजकुमारी एलिजाबेथ और फिलिप माउंटबैटन का विवाह हुआ.
1971 - चीन को राष्ट्र संघ का सदस्य बनने के लिए महासभा में दो तिहाई मत नहीं मिले.
1990 - सद्दाम हुसैन ने ढाई लाख इराकी सैनिक कुवैत भेजे.
1997 - भारतीय मूल की कल्पना चावला व चालक दल के अन्य पांच सदस्य अंतरिक्ष में पहुंचे.
2004 - उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती चंदोली जिले के नौगढ़ थाना क्षेत्र में नक्सलियों ने 18 पुलिस व पीएसी के जवानों की हत्या की.
2005 - नीलगिरी माऊंटेन रेलवे विश्व विरासत सूची में शामिल.